पाठ 6.3 : विकसित भारत का स्वप्न

D2F2DF

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

*भारत रत्न **डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम** भारतीय गणतंत्र के 11वें राष्ट्रपति रहे। डॉ. कलाम की मिसाइलमैन एवं पीपुल प्रेसिडेंट के रूप में पहचान रही है। बच्चों और युवाओं के अतिशय प्रिय डॉ. कलाम ने कई पुस्तकों का लेखन किया है जिनमें उनकी बहुचर्चित आत्मकथा– **अग्नि की उड़ान (विंग्स ऑफ फायर), इग्नाइटेड माइंड्स, इण्डिया 2020** चर्चित कृतियां रही हैं। प्रस्तुत लेख में डॉ. कलाम ने प्राचीन ज्ञानवान समाज से लेकर विकसित भारत के स्वरूप और चुनौतियों पर प्रकाश डाला है।*

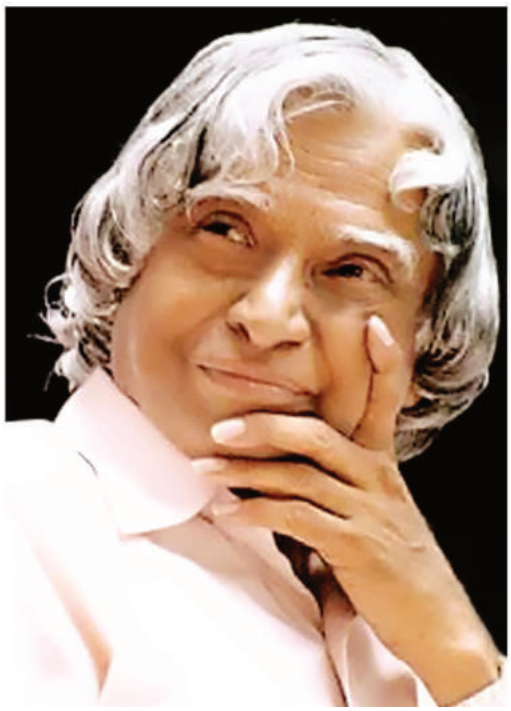

प्राचीन भारत एक ज्ञानवान समाज था। कालांतर में हमलों और औपनिवेशिक शासन ने इसकी संस्थाओं को नष्ट कर दिया तथा इसकी योग्यता को चौपट कर डाला। इसकी जनता का अस्तित्व निचले स्तरों तक सिमटकर रह गया। जब अंग्रेजों ने भारत छोड़ा तब तक हमारे युवाओं ने अपने लक्ष्य धूल–धुसरित कर लिए थे और वे साधारण जीवन से ही संतुष्ट हो जाया करते थे। भारत मूलतः ज्ञान की भूमि है और उसे अपने इस पहलू की नए सिरे से खोज करनी चाहिए। एक बार यह खोज कर ली गई तो जीवन की गुणवत्ता तथा विकसित राष्ट्र की ताकत और संप्रुभता को प्राप्त करने के लिए ज्यादा संघर्ष नहीं करना पड़ेगा।

ज्ञान के कई रूप होते हैं और यह कई स्थानों पर उपलब्ध होता है। इसे शिक्षा, सूचना, बुद्धिमानी तथा अनुभव के जरिए प्राप्त किया जा सकता है। यह शैक्षिक संस्थानों में अध्यापकों के पास, पुस्तकालयों में, शोध पत्रों में, गोष्ठियों तथा विभिन्न संगठनों में और कार्यस्थलों में कर्मियों, प्रबंधकों, ड्राइंग, प्रक्रिया दस्तावेजों और यहां तक कि दुकानों तक में होता है। हालाँकि ज्ञान का शिक्षा से करीबी नाता है। लेकिन यह कलाकारों, दस्तकारों, हकीमों, वैद्यों, दार्शनिकों और संतों तथा यहां तक कि हमारी गृहणियों के पास मौजूद कौशलों से भी प्राप्त किया जा सकता है। ज्ञान इन सभी के प्रदर्शन तथा कार्य–उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हमारी विरासत और इतिहास, कर्मकांड, महाकांड और वे परंपराएं, जो हमारी चेतना का हिस्सा हैं, ये सब दरअसल, पुस्तकालयों तथा विश्वविद्यालयों की ही तरह ज्ञान के विशाल स्रोत हैं। हमारे गाँवों में

गैर–पुरातनपंथी और दुनियावी समझदारों की भरमार है। हमारे वातावरण में, महासागरों में, जैव–संरक्षण और रेगिस्तानों में तथा पेड़–पौधों और पशु–जीवन तक में ज्ञान भंडार छिपे हैं। हमारे देश के हर राज्य में ज्ञानवान् समाज के लिए उसकी अपनी अनूठी और अद्‌भुत क्षमता मौजूद है।

ज्ञान हमेशा से समृद्धि और ताकत का स्रोत रहा है। यही कारण है कि दुनिया भर में ज्ञान की प्राप्ति पर जोर दिया जाता रहा है। भारत में तो ज्ञान को आपस में बाँटने की संस्कृति रही है और इसके लिए गुरु–शिष्य परंपरा के अलावा पड़ोसी देशों से, नालंदा तथा ज्ञान के अन्य केंद्रों की ख्याति से प्रभावित होकर यहां आए यात्रियों के जरिए इसके प्रचार–प्रसार की भी परंपरा रही है। भारत कहीं–कहीं प्राकृतिक तथा प्रतिस्पर्धात्मक दृष्टि से कई मायने में लाभ की स्थिति में है; लेकिन ऐसे क्षेत्र अलग–थलग हैं और उनके बारे में पर्याप्त जागरूकता भी नहीं है। पिछली शताब्दी के दौरान यह विश्व मानव श्रम–आधारित कृषि–समाज न रहकर औद्योगिक समाज बन गया, जिसमें प्रौद्योगिकी, पूंजी तथा श्रम का प्रबंध ही प्रतिस्पर्धात्मक लाभ दिला सकता है। इक्कीसवीं शताब्दी में एक नए समाज का उदय हो रहा है, जिसमें पूँजी और श्रम की बजाय ज्ञान ही प्राथमिक उत्पादन संसाधन है। पहले से मौजूद ज्ञान के इस आधार का कुशल इस्तेमाल हमारे लिए बेहतर स्वास्थ्य, शिक्षा और प्रगति के अन्य संकेतकों के रूप में पूँजी पैदा कर सकता है। विभिन्न क्षेत्रों में हुई उन्नति का लाभ उठाते हुए कौशल और उत्पादकता को बढ़ाकर ज्ञान रूपी ढाँचागत तंत्र का निर्माण तथा उसका रख–रखाव ही इस समाज की समृद्धि बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं। कोई देश ज्ञानवान् समाज की कसौटी पर खरा उतरता है या नहीं इसका पता इस प्रकार लगाया जा सकता है कि वह ज्ञान के सर्जन और उसके उचित इस्तेमाल के क्षेत्र में कैसा कार्य कर रहा है।

ज्ञानवान् समाज के दो महत्वपूर्ण अवयव सामाजिक बदलाव तथा धन निर्माण से प्रेरित होते हैं। सामाजिक बदलाव दरअसल, शिक्षा, स्वास्थ्य रक्षा, कृषि और शासन के क्षेत्र में आते हैं। ये ही रोजगार सर्जन, उच्च उत्पादकता तथा ग्रामीण समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करेंगे। देश के लिए धन निर्माण के कार्य को राष्ट्रीय क्षमताओं से जोड़कर देखा जाना चाहिए तभी विकसित भारत के मिशन को सफल बनाया जा सकता है और इसमें आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए युवकों के अदम्य साहस, संकल्पशक्ति और सम्मिलित प्रयास की आवश्यकता है। कोई राष्ट्र अपने नागरिकों की सोचने–समझने के तौर–तरीकों से महान बनता है। खासकर भारत की युवा पीढ़ी के सामने महान उद्‌देश्य होना चाहिए, छोटे–छोटे लक्ष्यों में अपने आप को सीमित कर लेना गुनाह जैसा है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली छात्रों पर काम का बोझ बढ़ा रही है, किन्तु यह उन्हें सपने देखने से वंचित न करे। यह उन्हें ज्ञान प्राप्त करने के लिए बाधक न बने। कठिन परिश्रम और लगन जीवन में खूबसूरत पैगाम लाते हैं जो हमेशा आपको सहयोग देते रहेंगे।

सन् 1960 के दशक में हमारे अंतरिक्ष कार्यक्रम के दूरद्रष्टा वैज्ञानिक प्रो. विक्रम साराभाई ने एक ध्येय सामने रखा कि भारत को अपने संचार उपग्रह और दूर–संवेदी उपग्रहों की रूपरेखा तैयार कर उन्हें खुद विकसित करना चाहिए, और भारत के प्राकृतिक संसाधनों के आंकलन के लिए उन्हें भारतीय जमीन से ध्रुवीय कक्षाओं में प्रक्षेपित करना चाहिए। आज उनके सपने सच हो गए, आज भारत किसी भी प्रकार की अंतरिक्ष प्रणाली के निर्माण में सक्षम है।

विकसित भारत महज एक सपना नहीं, जब यह सपना सच हो जाएगा तो इसका सबसे अधिक लाभ युवाओं को होगा। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि इस सपने को साकार करने में शुरू से ही युवा पीढ़ी को सहयोग करना चाहिए। उसे अपनी शैक्षिक और पारिवारिक सीमाओं में रहते हुए अपनी शोध यात्रा के अनुरूप बेहद अनोखे अंदाज में निभा सकते हैं। माता–पिता और बच्चों की टोली में यह चिंता उमड़ती–घुमड़ती रहती है कि पढ़ाई पूरी करने के बाद कौन सा रोजगार मिलेगा, छोटी–मोटी बाधाओं से घबराए बिना जिस विषय का अध्ययन करते हैं यदि उसमें आपका प्रदर्शन उत्कृष्ट बना रहता है, तो इसके कोई शक नहीं कि आपकी संभावना और भविष्य जगमगाते रहेंगे।

रोजगार के अवसरों की कोई कमी नहीं, किंतु जब कोई व्यक्ति बहुत ही खासम–खास चाहत रखता है और कहता है कि उसे सिर्फ सरकारी नौकरी चाहिए तो काफी दिक्कतें आती हैं। यदि आप उद्यमशीलता, डिजाइन, उद्योग, अपने नए विचारों के साथ कृषि कार्य करने, सूचना प्रौद्योगिकी उत्पाद बनाने के बारे में सोच सकते हैं तो युवा पीढ़ी के सामने अनंत संभावनाएं हैं। भावी युवा पीढ़ी के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि वे ज्ञान और शारीरिक सहयोग के हथियार का उपयोग करते हुए सभी क्षेत्रों में सहयोग करने का मन बना लें।

एक विकसित राष्ट्र का बहुत ही महत्वपूर्ण पैमाना है उसका साक्षर स्तर। सौ करोड़ लोगों को शिक्षित करना कोई खेल नहीं, यह लक्ष्य अपने सभी युवकों के सहयोग से ही प्राप्त किया जा सकता है, आप में से ऐसे बहुत से खुशनसीब हैं जो अच्छे स्कूल में पढ़कर स्तरीय शिक्षा ले रहे हैं किंतु बहुत से आपके भाई–बहनों को यह नसीब नहीं, खासकर जो आपके आस–पास के गाँवों में रहते हैं।

एक विकसित राष्ट्र की पहचान है कि उसमें अमीर–गरीब के भेद दृढ़तापूर्वक मिटा दिए जाएं। इसका एक तरीका यह है कि आपका स्कूल आपके पड़ोस के एक गाँव को अपना ले और अपने प्रत्येक छुट्टियों के दिन उस गाँव में जाए और कम से कम दो लोगों को साक्षर बनाने में सहयोग देकर ज्ञान का दीप जलाए। इसके साथ ही बच्चे अपने विद्यालय परिसर या घर में दस पौधे लगा सकते हैं। जो आज से कुछ सालों के बाद हम सभी हरे–भरे परिवेश में काम कर सकेंगे, जिससे हमारे अंदर सृजनात्मक सोच और सक्रियता पनपेगी। छात्र बुजुर्गों, बीमारों और विशेष आवश्यकता वाले लोगों की देखभाल कर सकते हैं। ऐसे भद्र व्यवहार से विकास के लिए अनुकूल और शांतिपूर्ण माहौल तैयार हो सकेगा तो निष्ठापूर्ण कार्य हो सकेंगे और शत–प्रतिशत सफलता मिलेगी। यहां पर मुझे संत तिरुवल्लुवर की वो पंक्तियां याद आती हैं जो उन्होंने तिरुक्कुरल में बड़ी सुंदरता से कहा है– "सफलता और धन अपना मार्ग ढूँढ़ लेते हैं और उस व्यक्ति तक पहुंच जाते हैं, जिसमें वह दृढ़ इच्छाशक्ति और योजनाबद्ध लगन होती है। नसीब उस इंसान तक खुद चलकर आ जाता है, जिसमें अदम्य उत्साह और कभी न पस्त होने वाली हिम्मत होती है।"

शब्दार्थ

औपनिवेशिक – उपनिवेश में रहने वाला; **अस्तित्व** – सत्ता, विद्यमान होना; **संप्रभुता** – सर्वप्रधान, जिसे संपूर्ण अधिकार प्राप्त हो, जैसे– राष्ट्र; **प्रतिस्पर्धा** – आगे बढ़ने की प्रवृत्ति; **तंत्र** – शासन प्रबंध, शासन की विशिष्ट प्रणाली; **सर्जन** – रचना, निर्माण; **गुनाह** – अपराध; **पैगाम** – संदेश; **मिशन** – उद्देश्य, कोई विशेष लक्ष्य अथवा ध्येय।

अभ्यास

पाठ से

1. ज्ञानवान समाज से लेखक का आशय क्या है?
2. लेखक के अनुसार ज्ञान के कई रूप हैं जिसे शिक्षा, सूचना, बुद्धिमानी तथा अनुभव के जरिए कहां–कहां से प्राप्त किया जा सकता है?
3. "भारत में ज्ञान बाँटने की संस्कृति रही है" का निहितार्थ क्या है?
4. ज्ञानवान समाज के दो महत्वपूर्ण अवयव कौन–कौन से हैं इस पर अपने विचार रखें।
5. विकसित भारत के मिशन में आई चुनौतियों का किस तरह से सामना किया जा सकता है?
6. आशय स्पष्ट कीजिए– "विकसित भारत महज एक सपना नहीं है।"
7. "सफलता और धन अपना मार्ग ढूँढ़ लेते हैं" संत तिरुवल्लुवर के इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

पाठ से आगे

1. लेखक ने हमारे गाँवों में कई तरह के ज्ञान के भण्डारों की चर्चा की है? आपको अपने गाँव के लोगों में ऐसे किस तरह के ज्ञान की जानकारी मिलती है?
2. प्राचीन भारतीय समाज में किस प्रकार के ज्ञान और कौशल उपलब्ध थे उनकी सूची बनाइए एवं उस पर अपने साथियों से चर्चा कीजिए।

D2NXF3

3. अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियों पर एक आलेख तैयार कीजिए।
4. विकसित भारत के सम्बंध में डॉ. कलाम के विचारों को अपने शब्दों में लिखिए।

भाषा के बारे में

1. वर्तनी शुद्ध कर लिखिए –

   (1) विकसीत, (2) मुलतः, (3) बुद्धी, (4) दूकान, (5) प्राक्रतिक,

   (6) ओधोगिक, (7) परयाप्त, (8) स्तेमाल, (9) प्रतिर्स्पधात्मक, (10) ऊत्पादन।

2. संधि विच्छेद कर संधि का नाम लिखिए–

   पुस्तकालय – पुस्तक + आलय – दीर्घ स्वर संधि

   विद्यालय, महर्षि, यद्यपि, अन्वय, रामायण, महेन्द्र, तथैव, परमेश्वर, पावन, पवन

3. निम्नांकित शब्दों का समास विग्रह कर समास का नाम लिखिए–

   (1) योजनाबद्ध, (2) उमड़ती–घुमड़ती, (3) माता–पिता

   (4) श्रम–आधारित, (5) आपदा–प्रबंधन

4. जब दो अलग–अलग वाक्य को जोड़कर एक संयुक्त वाक्य बनाना हो तो हम क्योंकि, चूँकि, इसलिए, बल्कि इत्यादि शब्दों का प्रयोग करते हैं।

   जैसे– (क) उसका गृह–कार्य अधूरा था।

   (ख) उसे शिक्षक की डाँट खानी पड़ी।

   संयुक्त वाक्य – उसका गृह–कार्य अधूरा था इसलिए उसे शिक्षक की डाँट खानी पड़ी।

   इस तरह के योजक शब्दों की सहायता से निम्नांकित दो वाक्य के समूह को क्रम की उचित अदला–बदली के साथ संयुक्त वाक्य में बदलिए–

   (क) (i) बारिश हो रही थी।

   (ii) वे नहीं आ सके।

   (ख) (i) वस्तुएँ महँगी थीं।

   (ii) वे नहीं खरीद सके।

(ग) (i) भोजन हमेशा संतुलित मात्रा में करना लाभदायक होता है।

(ii) ज्यादा मात्रा में भोजन करना रोगों को दावत देना है।

(घ) (i) वह डर गया था।

(ii) वह बोल नहीं पा रहा था।

(ङ) (i) सामान बहुत वजनी था।

(ii) वह उठा नहीं पा रहा था।

5. पाठ में से सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य व मिश्र वाक्यों के तीन–तीन उदाहरण छाँटकर लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. डॉ. कलाम के विद्यार्थी जीवन के बारे में पता कर एक लेख तैयार कीजिए।
2. छत्तीसगढ़ में डॉ. कलाम का आगमन हुआ था। उस समय उनके द्वारा छत्तीसगढ़ पर एक कविता लिखी गई थी, इसे खोजकर लिखिए।

D37PID

●●●